यजुर्वेद

यजुष् का यजुर्वेद संहिता 'अध्वर्यु' पुरोहितों का ग्रन्थ है। यजुः शब्द यज् धातु से बना है। जिसका अर्थ है - 'यजन, पूजन'। 'यजुर्यजतेः' अर्थात् यज्ञ सम्बन्धी मंत्रों को युजस् कहते हैं। 'इज्यते अनेन इति यजुः'। जिन मंत्रों से यज्ञ किया जाता है, उन्हें युजस् कहते हैं। ऋक् और साम से भिन्न गद्यात्मक मंत्रों का अभिधान ही यजुः है।

भाग:→ यजुर्वेद के दो भाग हैं :-

(1.) शुक्ल यजुर्वेद (2.) कृष्ण यजुर्वेद

कृष्ण एवं शुक्ल यजुर्वेद:→ कृष्ण तथा शुक्ल यजुर्वेद के नामकरण के कई कारण हो सकते हैं तथा अधिक तर्कसंगत कारण शुक्ल यजुर्वेद में केवल मंत्रों का होना तथा कृष्ण यजुर्वेद में मन्त्र तथा ब्राह्मण का होना लगता है।

(1.) शुक्ल यजुर्वेद:→ अत्यधिक पवित्र होने के कारण इसका नाम शुक्ल पड़ा। दूसरा शुक्ल कहने से अभिप्राय यह भी है कि इसमें विशुद्ध मन्त्रात्मक भाग है। इस वेद में मुख्य रूप से कर्मकाण्ड का प्रतिपादन हुआ। इस को 'वाजसनेय-संहिता' भी कहा जाता है। यह भी कहा जाता है कि याज्ञवल्क्य ने सूर्य देव की तपस्या करके उसे सन्तुष्ट करके शुक्ल - यजुर्वेद को प्राप्त किया था। इस कारण 'वाजसेनय' संहिता नाम पड़ गया।

वाजसेनया संहिता में ५० अध्याय हैं जिनमे से अन्तिम 15 अध्याय 'खिल' होने के कारण परवर्ती माने जाते हैं।